ॐ

२४।१।१२

❀ चमगादडो का शिबीर ❀

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

गहन ध्यान अनुष्ठान चल रहा है। और अनुष्ठान मे साक्षात सभी- गुरुशक्तीया विधमान है। और इनकी उपस्थीती का प्रभाव तो आसपास के पशु पक्षीयो पर भी पड रहा है, ऐसी ही एक घटना आज हो गयी रोज जब भी ध्यान करने को बैठता था, तो मेरे सामने लगी जाली पर कुछ चमगादड आकर नियमीत बैठ रहे थे, मैने इनकी ओर ध्यान नही दिया एक दिन थोडा गौर से देखा तो वे एक निश्चीत अन्तर रख कर बैठ रहे थे। एव कतार लगाकर बैठ रहे थे। मुझे थोडा अचरज लगा। लेकीन फीर भी मैने ध्यान नही दिया।

लेकीन आज सुबह तो चमत्कार ही हो गया आज सुबह ध्यान कर रहा था तो मुझे आवाज आयी "गुरुदेव हम पर भी कृपा किजीये" "हमे भी आव्हान दे" मैने देखा तो जो चमगादड मेरे सामने जाली पर लटकते थे उनमे आगे जो चमगादड था वह बोल रहा था, वह उम्र मे भी बडा लग रहा था। वही इनका शायद "आचार्य" होगा, आज मैने देखा की वह ठीक वैसे ही बैठे थे जैसे सेन्टर पर **सब** साधक बैठते है, मैने कहा की अभी तुम्हे नही दिया जा सकता है, तो बोला कल आपने एक "कव्वे" को आत्मव्हान कराया वह हमने देखा तो एक कव्वे को आप अनुभुती करा सकते है, तो हमे क्यो नही मैने कहा की

अनुभुती पाकर उस कव्वे ने देह ही त्याग कर दिया वह मुझे अच्छा नही लगा। उसे साधक के रुप मे जन्म लेने की इतनी तिव्र इच्छा हुयी की उसने प्राणत्याग ही कर दिया क्योकी वह मेरे जिवनकाल मे साधक बन कर आना चाहता है। उसका कव्वे के शरीर का सारा मोह ही छुट गया और अनायास ही उसने अपना शरीर ही छोड दिया,

वह बडा चमगादड बोला नही हम ऐसा नही करेंगे मै आपको इसका वचन देता हु, मनुष्य नही जानते उलटे लटकने की पीडा क्या होती है, लेकीन उलटे लटकने की पीडा क्या होती है। यह हम अच्छी तरह जानते है, क्योकी हमारा सारा जन्म ही उलटा लटककर बीतता है, अब हमे आत्मज्ञान कराईये हम अगले जन्म मे मनुष्य बनेंगे और इस उलटे लटकने से "मुक्ती" पायेंगे, क्योकी अगले मनुष्य जन्म का उपयोग हम "मोक्ष" प्राप्ती करने के लिये करेंगे।

अब गुरुदेव आप ही बताईये हमारे और मनुष्य मे क्या "अन्तर" है, मैने कहा तुम "चमगादड" हो "मनुष्य" आखीर मनुष्य होता है, मनुष्य योनी वह योनी है। जिसमे मनुष्य चाहे तो "मोक्ष" की स्थिती अपने जिवनकाल मे बना सकता है। और उसी "मोक्ष" की स्थिती को अपने मृत्यु तक बनाये रख सकता है, इसी लीये आत्मज्ञान पाने का मनुष्य को अधीकार है, और इसी लीये उन्हे केवल देता हु, मै तो गुरुशक्तीयो का एक माध्यम हु वे इच्छा करते है, इस लिये उन्हे "आत्मसाक्षात्कार" होता है, मै स्वंयम कुछ नही करता उनकी इच्छा के कारण ही उन्हे मिलता है, और वे "ध्यान" करके सभी सांसारीक बातो से अपने आप को मुक्त कर लेते है, और यह "मुक्त" होने की स्थिती ही "मोक्ष" कहलाती है, वे जब "मुक्त" हो जाते है, तो अगला जन्म लेने का कोई कारण ही नही रहता है

बडा चमगादड बोला यह सब आप इस लीये कह रहे हो क्योंकी आप "मुक्त" हो चुके हो। लेकीन केवल आत्मसाक्षात्कार पा कर मनुष्य कभी "मुक्त" होता है, क्या? मेरी दृष्टी से तो "मनुष्य" और हम "चमगादड" एक ही जैसे है, हम दोनो मे कोई अंन्तर नही है, हम एक कैसे है, मै बताता हूं। ऐसा कह कर बडा सा चमगादड बोलने लग गया। मनुष्य जब अपनी माँ के गर्भ मे रहता है, तो हमारी तरह उलटा ही लटका रहता है, और "नौ महीने नौ दिन" उलटा लटककर भी कुछ सबक नही सिखता है, मनुष्य जन्म लेकर बाहर की दुनीया मे आता है, और दौडते ही रहता है, अब जैसे अती सोना नही चाहीये तो वह जिवन अती "सोते" रहता है, अती खाना नही चाहीये तो वह अती "खाते" ही रहता है, अती धन नही जमा करना चाहीये तो वह अती "धन" जमा करते रहता जो जिवन मे नही करना चाहीये वह करता है, अती बोलना नही चाहीये तो "अती बोलते" ही रहता है, यह सब करके अपने जिवन को व्यर्थ करते रहता है, और जो करना चाहीये वह नही करना सदैव "चित्त" भितर रखना चाहीये तो वह बाहर ही रखता है, "ध्यान" करना चाहीये ताकी वह इन सब बातो से "मुक्त" हो सके तो "ध्यान" बीलकुल नही करता और ध्यान करता भी है, तो केवल निजी स्वार्थ के लिये तो आप बतायिये ऐसे मनुष्यो को आप भले ही "आत्मसाक्षात्कार" करा दो, उस "आत्मसाक्षात्कार" का उपयोग भी वे स्वार्थ सिद्धी के लिये करेगे, "ध्यान" वे करेगे नही इसलीये मुक्त वे होगे नही मुक्त वे होगे नही तो "मोक्ष" की स्थिती उन्हे मिलेगी नही और मनुष्य जन्म लेकर केवल मैथुन, निद्रा, और आहार ही करेगे। तो हमारे और उनमे क्या अंन्तर है, और रही बात उलटा लटकने की तो यह मनुष्य "आत्मसाक्षात्कार" पा कर भी अगर मनुष्य

"ध्यान" नही करता है। और इस जिवन मे मोक्ष नही प्राप्त करता तो वह फिर मृत्यु को प्राप्त करेगा और फीर नया जन्म लेगा, और फिर कीसी माँ के गर्भ मे आकर फीर "नौ महीने नौ दिन" उलटा लटकेगा तो "मनुष्य" भी "चमगादड" ही है, अब बताईये ऐसे मनुष्यो मे और हमारे मे क्या अन्तर है, हम भी कभी उडते है, और वापस आ कर लटकते रहते है, वैसे मनुष्य भी उलटा लटकते रहता है, बाहर निकलता है दौडभाग करता है, फिर वापस आकर माँ के गर्भ मे लटकने लग जाता है, अब बताईये हम दोनो तो एक ही जैसे है, ऐसा कह कर बडे विनम्र भाव से आँखे बंद कर वह बडा चमगादड नतमस्तक हो गया और मैने देखा की सारे ही चमगादडो ने उसका अनुकरण किया मानो सारे सामुहीक प्रार्थना कर रहे हो।

मै वह देखकर अती प्रभावीत हुआ जहाँ आत्माओ का समुह है, वहाँ परमात्मा ही है। ऐसा भाव रख मैने पानी अभीमंत्रीत किया और तीन बार गुरुमंत्र कहकर वह पानी उन चमगादडो पर छीट दिया तो वह बडा चमगादड बोला इस जन्म मे आपसे "आत्मज्ञान" पा कर हम धन्य हो गये हमारा चमगादड का जन्म सफल हो गया, आज हमे गर्व है, की हम चमगादड है। इस जन्म मे आत्मज्ञान मीला है, तो अगले मनुष्य जन्म मे हम मोक्ष की स्थिती अवश्य प्राप्त करेगे ऐसा आशिर्वाद दे क्योंकी उलटे लटकने की पीडा क्या होती है, वह हमने भोगी है हम मनुष्य जन्म का उपयोग मोक्ष के लीये करेगे ही क्योंकी अगला जन्म लेकर हमे फीर नही उलटा लटकना है। हमने यह सब अपने जिवन मे मीली पिडा से जाना है।

मैं उस बडे चमगादड की बाते सुनकर एकदम दंग हो गया। सचमुच ऐसा लगा की ये तो एकदम सही कह रहा है, मनुष्य अपनी माँ की कोख मे उलटा ही लटका रहता है, और इससे कोई सीख नही लेता और जिवन मे व्यर्थ के कर्म करके फीर कीसी दुसरी माँ के गर्भ मे उलटा लटकने की तैयारी करने लग जाता है, और यही सिलसीला बार २ दोहराते ही रहता है।

केवल ध्यान सिखाकर क्या होगा। और केवल सीख कर क्या होगा। जब तक प्राप्त "आत्मज्ञान" कोई मनुष्य "आत्मसात" नही करता कोई फायदा नही है, "गुरु की करनी गुरु जायेगा" "चेले की करनी चेला" यह कहा है। वह ठीक ही जान पडता है, "आत्मज्ञान" प्राप्त करने के साथ मनुष्य उसका महत्व भी पहचाने और अपने मनुष्य जन्म को "सार्थक" करे और यह "उलटा लटकने" की स्थिती से बचे यही प्रभु से प्रार्थना है।

आपका
बाबास्वामी
28/1/2012